International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.972 Volume 11 Issue 01, Jan 2024
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

ज्ञानरंजन कृत'फेंस के इधर और उधर' कहानी– संग्रह में स्वतंत्रता के नैतिक आयाम

शोधार्थी–मंजु बाला
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान–335801

निर्देशक : डॉ. रचना शर्मा
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान–335801
DOI:aarf.irjhll.44545.22136

शोध सारांश
अन्दरुनी तौर पर लोग वैसे ही दकियानूस हैं, स्वतंत्रताओं के हिमायती होने का ढोंग और सफल अमिनय करते हैं यानी वे महसूस तो करते हैं कि स्वतंत्र होकर, मुक्त व्यवहारों में जीना एक उपलब्धि है लेकिन उनके संस्कारों ने उन्हें इतनी गहराई से, जड़ों से बांध रखा है कि जीवन में जहां कहीं भी उस स्वतंत्रता के खतरों को झेलने, उठाने की बात आती है वह वे अपने उन्हीं आदर्शों में दुबक जाते हैं और उनके टूटने के डर से क्रोधित होते हैं, नैतिकता की दुहाई देने लगते हैं। कहानीकार भारतीय मानसिकता की ऐसी सीमाओं के खिलाफ खुले हुए रूप में कुछ नहीं कहता है बहुत ही तीखे ढंग से लेकिन इन सीमाओं को एक छिपे हुए व्यंग्य की नोक से कुरेद देता है।
मूल शब्द – दिखावटी, हिमायती, उपलब्ध, भीतरी सीमा, भारतीय मानसिकता

प्रस्तावना–

स्वतंत्रता को दिखावटी तौर पर जीते रहने का दम्भ भरना और बात है और उस स्वतंत्रता के खतरों का सामना करना दूसरी बात है। जीने की शर्त पर अपनी उन भीतरी सीमाओं को तोड़कर उस स्वतंत्रता को उपलब्ध करना निश्चित रू‍ से एक उपलब्धि है लेकिन इसके लिए खोलों वाली, मुखौटोंवाली जिन्दगी नहीं, भीतर–बाहर दोनों स्तरों पर स्वतंत्र होने को सिद्ध करना ही जिंदगी को ईमानदारी से जीना है।

'फेंस के इधार और उधर' कहानी में ' मैं' अपने से ऊंचे तबके वाले लोगों के सामने एक मानसिक दबाव महसूस करता है। फेंस के उधर वाले परिवार को सदा हसते हुए देख कर 'मैं' व उसका परिवार म नही मन अपनी जड़ें उखड़ते हुए पाते हैं, उन्हें लगता है वे कहीं नहीं है। उधर की उन्मुकतता उनकी जकड़नों की चूलें हिलाती हुई प्रतीत होती हैं। 'मैं' हीन–भावना के दबाव में एक आन्तरिक यातना भुगतनी है, उनके पास कैसी बातें हैं और वे क्यों हमेशा हंसते ह। क्या उनके जीवन में हंसते रहने के लिए ढेर सी सुखद परिस्थितियां हैं? क्या वे जिंदगी की कठिन और वास्तविक परिस्थितियों से गाफिल हैं।1

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

उनकी मुक्त हंसी और खुले हुए व्यवहार से 'मैं' अप्रत्यक्ष रूप से आक्रान्त होता है–वह अपने घर और दूसरे घर में तुलना करता ह और परेशान होता है जैसे हमारे घर और दूसरे घरों में बहुत सी अन्दरुनी और छोटी मोटी परेशानियां होती हैं वैसी शायद इनके यहां नहीं है। नहीं होना एक अचम्भा है। 2

अपने घर के परिवेश की सारी कमियां 'मैं' के दिमाग में ज्यादा और से उभर आती है आर स्वयमेव एक लम्बी सांस छूट जाती है। हमारे घर में तो मौसम, मच्छर, बच्चों की पैदाइश, रिश्तेदारी की बहुओं, चूल्हा चौका तथा वर्तमान का कचूमर निकाल देने वाले भव्य अतीत के दिव्य फरूषों का ही बोलबाला है।

असल में उसके इस तरह सोचने और दुःखी होने और ठंडो सांस भरने के पीछे अपनी स्थितियों के प्रति सुलगता हुआ विद्रोह का भाव भी है, एक ऊब और हिकारत की भावना है– फेंस के इधर और उधर के परिवारों में कितना अंतर है, इधर जिंदगी परंपरागत दकियानूस ढर्रों में बंधी है और बंधन का अहसास उधर के परिवार को दख–देख कर और भी कौंच उठता है। अपने घर के हालातों मे उसे लगता है जिंदगी फिजूल हुई जा रही है उसका किसी काम में मन नहीं लगता है– आँखें फेंस लांघ जाती हैं। मन पड़ौसी घर में मंडराने लगता है, 'युवा और असंपृक्त लड़की। खुश मिज़ाज और बेख़ौफ माता–पिता। काश मैं उनके घर में ही पैदा हुआ होता। मन यूं उड़ता है। 3 साफ़ जाहिर है उसकी यह कामना, अपनी स्थितियों के प्रति असंतोष से उभरी है।

उसका स्वातंत्रय–बोध इन फराने ढर्रों के घिसटती जिंदगी ;जहां भाभी पूजा के फूल भी पप्पी के साथ लेने निकलती है जो बाहर भी डरती है और घर में भीद्ध के खिलाफ कहानी में उधर भी मुक्त और स्वच्छंद स्तर पर तैरती जिंदगी से कुरेदा जाता है और वह एक अनाम–सी छटपटाहट महसूस करता है।

विडम्बना यह है कि स्थिति से निकलने का कोई रास्ता नहीं है इसलिए उधर का घर उसकी और परिवार के सभी लोगों की इर्ष्या का केन्द्र बन जाता है। वे लोग तरह–तरह से अपनी अरूचि उनके प्रति उगलते रहते हैं। उन्हें तमाम बुराईयों का संदर्भ बना लिया गया है– बहुत सी दूसरी चिंताओं के साथ मन में एक नई उद्विग्नता समाने लगती है। यह सारी प्रतिक्रियाएं उस स्तर तक पहुंच न पाने की सीमाओं के कारण उत्पन्न हुई है, हसरत है लेकिन वह पूरी नहीं होती है इसलिए उसके अभाव में एक बचकाना गुस्सा जन्म लेता है– एक जबरदस्ती का आक्रोश जन्मता है। इस प्रकार यह कहानी अपने से ऊँचे स्तर के लोगों की स्वतंत्रताओं से एक मानसिक दबाव महसूस करने की आर अपने परिवेश से मुक्ति पाने की तीव्र छटपटाहट की कहानी बन जाती है।

'संबंधा' कहानी में 'मैं' प्रारंभ में अपनी प्रसन्नता अनुभव करने की स्थिति को एक घटना की तरह घोषित करता है, अर्थात जिन हालातों में आज का व्यक्ति जी रहा है, उनमें प्रसन्न रहने की स्वतंत्रता हर्गिज नहीं है इसीलिए वह अपनी प्रसन्नता को अत्यधिक महत्त्व दे रहा है और खुश हो रहा है। प्रसन्नता आदमी को निःसंदेह खुला हुआ और उन्मुक्त बनाती है और वह जैसे इस उन्मुक्तता इस खुलेपन की तलाश में सदा से था। अपनी प्रसन्नता जाहिर करते हुए उसे स्वयं ही संदेह होता है कि कहीं लोगों को विश्वास ही नहीं कि वह सच बोल रहा है– पता नहीं आप इस तरीके से क्यों सोच रहे हैं, कि एक हिंदुस्तानी युवक का प्रसन्नता से किसी तरह का संपर्क हो भी सकता है। 4 यहां कहानीकार उस स्थिति की तरफ संकेत दे गया है जहां वर्तमान जीवन स्थितियों में भारतीय युवक के लिए प्रसन्नता की कहीं गुंजादश नहीं है। वास्तविक प्रसन्नता हर हालत में, मुक्तता और स्वतंत्रता से उगती है और वह मुक्तता और स्वतंत्रता अभी भारतीय युवक को नसीब नहीं है– ऊपर से न दिखाते हुए भी सैंकड़ों अनाम बंधन हैं, कड़े निर्देश देती उंगलियां हैं जो उसे स्वच्छंद और स्वतंत्र नहीं रहने देते हैं।

इनका अहसास उसे घर के नजदीक पहुंचते ही होता है– वह पाता है उसकी प्रसन्नता सिकुड़ गई है, ठिठक गई है। वह एक हावी होते हुए त्रास का अनुभव करता है क्योंकि घर की इमारत मात्र उसे उन बंधनों का बोध करा देती है प्रसन्नता ठिठक गई और मैं महसूस भी न कर सका कि कब उसका सर्वनाश हो गया... यह जानते हुए भी कि घर में मुझे अच्छा खाना, अच्छा बिस्तर, आराम और दूसरी सहूयितें मिलती हैं। मैं थका और भयभीत बना रहा।'5 यह थकान और भय, घर के संबंधों में फैली शिथिलता, सतहीपन और सन्नाटे के कारण है और घोषित रूप से वह इन सबसे भागता है, इनका अहसास ही उसे सत्रस्त करता है। 'घर की इमारत के हिस्से टुकड़ों की तरह गड़ रहे हैं'6 यानी उस इमारत का, उस घर का होना उस घर से संबंधित होने का अहसास ही उसे पीड़ा देता है, कचोट देता है। घर में वह अब किसी संबंध के प्रति आत्मीयता महसूस नहीं करता–पत्नी का होना उसे भागने, बचने और बीमार होने के बोध से भर देता है वह चेहरा जिससे मेरी एक अल्प और बेजान सी मुटभेड़ हो गई उससे मैं हमेशा बचता रहना चाहता हूं' वह चाहता है घर में घुसने पर उसका साक्षात्कार किसी से नहीं। मां का होना उसे भावुकता और मोह के नाम पर गहरे कसे हुए उस संबंध की याद दिलाता है जो परंपरागत घरों में खींचे रखने और कुछ भी अलग या नया करने की स्वतंत्रता को खतरा समझकर उसे बांधे रखता है। वह कामना करत है जिस तरह उसकी मां बचपन में ही मर गई, मेरी भी मर गई होती तो बहुत सी बेहुदा स्थितियों से मेरा भी बचाव हो जाता।' 7

पत्नी का होना भी उसे त्रासदायक लगता है वह अधिकांश घरों में रहने वाली एक परिचित आकृति है जो दिन–ब–दिन मानवीय होती जा रही है। इस तरह चेहरों, आकृतियों को देखकर, मैं समझता हूं आप स्वस्थ नहीं रह सकते।'8 पत्नी का द्वार पर दिख जाना ही उसे एक ठंडेपन में सर्द कर देता है, उसे लगता है कि उसके शरीर ने किसी बफीर्ली सुरंग से गुजरना शुरू कर दिया है यानी दोनों के बीच के संबंधी की गर्मी अब बफ हो गई है और निभाने के नाम पर पत्नी को सहना उसे यंत्रणा सा लगता है, वह जिस व्यंग्यात्मक लहज़े में पत्नी, मां और भाई के संबंध में बातें करता है उससे जाहिर होता है, ये सभी संबंधा उसे फ़िजुल ही बांधे हुए हैं जबकि वह ईमानदारी से स्वीकार करता है, उनके प्रति कोई संवेदन वह महसूस नहीं करता और इस तरह संबंधों को ढ़ोए चलने से वह घुटन में जी रहा है मुझे मालुम है कि यह गंभीरता बहुत घटिया और बर्दाश्त के बाहर की चीज़ है, मुझे खुद ही इससे एक खुंखार घुटन होने लगती है।'9

माँ उसे आज केवल नाम का संबंध प्रतीत होती है, न चाहते हुए भी जबड़े दब गए हैं और अंदर से एक दो शब्द हिचकिचाती हुई खामोशी के साथ निकल जाते हैं 'यू वूमैन' ;ध्वनि : गेट आऊट आफ माई लाइफ10 वह समझता है और हंसता है। उन लोगों पर जो हमेशा महान दार्शनिक सच्चाईयों तथा सर्वोच्च ज्ञानामृत के प्रसंग में ही सोचा करते हैं– सच्चाई यह है कि इन सब आदर्शों फसफों से बंधकर वह अपनी सारी स्वतंत्रता खो देता है– सबसे पहले मानसिक स्तर पर, चिंतन के स्तर पर, फिर क्रिया–कलापों और व्यवहारों के स्तर पर। इस प्रकार 'संबंधा' कहानी संबंधों की सपाटता को ढोए चलते रहने की विवशताओं से स्वतंत्र होकर जाने की निरंतर तीव्र होती ख्वाहिश की कहानी बन जाती है।

'शेष होते हुए' कहानी भी सबंधों में खामोश हो गई, मुखरता और अंतरंगता की कहानी है। मझला आधुनिक जीवन में बढ़ती स्वार्थपरता, आत्मसुख की तृष्णा और क्रूरताओं के प्रति एक अव्यक्त–सा विद्रोह अनुभव करता है–वह मन से अपनी माँ को इन क्रूरताओं से मुक्ति दिलाना चाहता है लेकिन आर्थिक पराधीनता ने उसे भी एक टीसती हुई खामोशी में कैद कर दिया है– वह किस बल पर मां की मुक्ति का हिमायती बने।

निष्कर्ष

घर का वातावरण एक खास निरूत्साह को 'विस्पर' कर रहा है, एक दुसहय दबाव से दिलोदिमाग आक्रांत हो रहे है– एक अजीब नकली ढंग से सब व्यतीत हो रहे हैं'11 लकिन स्थितियों के प्रति बगावत की मनः स्थिति में जीते हुए भी मझला सिर्फ पलायन करता है, किसी रेस्तरां या बार में जादुइ लफ्फाजी करते, झूठी दुनिया की अनिवार्यता की सिर पर लादे, अंदरूनी तौर पर भागे, घबराए और बीमार लोगों के संसार में शामिल हो जाता है।'माँ से वह लगातार मुँह छिपाता है, माँ का उसे अहसास तो है लेकिन वे उसे डराते हैं। वह महज़ 'सोचने और ग़म करने लगता ह कि उसे माँ की आँखों में कभी भी नींद क्यों नहीं भरी मिलती। आँखों में मानो दर्द की एक शिला उसे अंदर ही अंदर भेदती रहती है।

संदर्भ सूची

१'फेंस के इधर और उधर' पृ०..५६
२--- वही --- पृ०...५७
३--- वही --- पृ०...५५
४ 'संबंध' – फेंस के इधर और उधर' पृ०... ११३
५ ----वही ---- पृ०...११४
६ ----वही ---- पृ०...११५
७ 'संबंध' : फेंस के इधर और उधर' पृ०..११४
८ ----वही--- पृ०...११५
९----वही--- पृ०...११६
१० ----वही--- पृ०...११७
11----वही--- पृ०...११६